श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर, जयपुर
1 से 15 अगस्त 2026 तक बाजरे की खेती के लिए सुझाव

जुलाई के महीने में नरमा की फसल में थ्रिप्स, हरा तेला, सफेद मक्खी, गुलाबी सुंडी एवं जड़ गलन रोग का प्रभाव देखने को मिलता है, इसलिए अपने खेत का प्रतिदिन निरीक्षण करें। किसी भी कीटनाशक का प्रयोग कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार ही हरें। जिन क्षेत्रों में अभी तक पर्याप्त वर्षा नहीं हुई है और कपास की फसल लगभग दो महीने की हो चुकी हे, वहां फसल में फूल दिखाई दे सकते हैं लेकिन बढ़वार अपेक्षाकृत कम हो सकती है। ऐसी स्थिति में घबराने की आवश्यकता नहीं है। वर्षा होने के बाद फसल की बढ़वार सामान्य रूप से बढ़ जाएगी।

अत्यंत महत्वपूर्ण सुझाव

- नरमा की फसल 40–45 दिनों की होने पर 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टे. की दर से गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए लगाएं। 3 रातों में यदि 12–15 गुलाबी सुंडी के व्यस्क ट्रैप होते हैं तो स्प्रै की आवश्यकता है।
- कपास की फसल 60 दिनों की होने के बाद गुलाबी सुंडी का प्रकोप फूलों में 5 से 10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव इमामेक्टिन बेन्जोएट 5 प्रतिशत एस.जी. की 250 ग्राम मात्रा या प्रोफेनोफोस 50 ई.सी. की 1000 मिलीलीटर मात्रा को 500 लीटर पानी की दर से प्रति हेक्टे. छिड़काव करें।
- जड़ गलन रोग से प्रभावित पौधों के आसपास के स्वस्थ पौधों में कार्बेंडाजिम (2ग्राम प्रति लीटर का घोल) बनाकर 400 से 500 मिलीलीटर प्रति पौधे के हिसाब से जड़ों में डालें।

उर्वरक

बुवाई से 3–4 सप्ताह पहले 15–20 टन गोबर की खाद प्रति हैक्टे. की दर से जुताई कर भूमि में अच्छी तरह मिला देवें। अमेरिकन कपास की किस्मों में प्रति हैक्टे. 75 किलो नत्रजन और 35 किलो फॉस्फोरस, देशी किस्मों में प्रति हैक्टे. 50 किलो नत्रजन एवं 25 किलो फॉस्फोरस तथा संकर किस्मों में प्रति हैक्टेयर 100 किलो नत्रजन व 40–50 किलो फॉस्फोरस देवे। पोटाश उर्वरक मिट्टी परीक्षण के आधार पर देवें।

फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा और नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई से पहले देवें। नत्रजन की शेष आधी मात्रा फूलों की कलियां बनते समय देवें।

कीट प्रबंधन

- जुलाई माह में कपास की फसल में सफेद मक्खी व हरे तेला का भी प्रकोप शुरू हो जाता है इसलिए इनकी निगरानी रखें। सफेद मक्खी यदि 6–8 प्रौढ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिलते हैं तो फ्लॉनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्ल्यू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 175 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में छिड़काव करें।
- 60 दिनों से कम अवधि की फसल में यदि थ्रिप्स/चूरड़ा की संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें तथा इसके बाद रासायनिक कीटनाशक अगर गुलाबी सुंड़ी के लिए प्रयोग किया गया हो तो थ्रिप्स का भी नियंत्रण हो जाता है।
- जिन किसान भाइयों ने अपने खेतों में बी टी नरमा की लकड़ियों को भंडारित करके रखा हे या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देन की जरूरत है। क्योंकि इन किसानों के खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप अधिक होता हैं
- नरमा कपास की फसल में फूल बनने की शुरुआत होने पर गुलाबी सुंडी की निगरानी अवश्य करे। इसके लिए प्रति सप्ताह खेत के विभिन्न स्थानों से कम से कम 100 फूलों का निरीक्षण करें। गुलाबी सुंडी से प्रभावित फूल फिरकीनुमा अथवा गुलाबनुमा दिखाई देते हैं। ऐसे फूलों को खोलकर देखने पर उनके अंदर गुलाबी सुंडी पायी जाती है।
- कपास की फसल 60 दिनों की होने के बाद गुलाबी सुंडी का प्रकोप (फूलों में 5 से 10 प्रतिशत) होने पर एक छिड़काव इमामेक्टिन बेन्जोएट 5 प्रतिशत एस जी की 250 ग्रम मात्रा को 500 लीटर पानी की दर से प्रति हेक्टे. छिड़काव करें। दूसरा छिड़काव प्रोफेनोफोस 50 ई.सी की 1000–1250 मिली मात्रा का 500 लीटर पानी की दर से प्रति हेक्टे. छिड़काव करें।
- इस माह से देशी कपास में चित्तीदार सुंडी का प्रकोप होता है जिसमें बढ़ती शाखा का मुरझा जाना, बोक्की या डोडी का गिरना या पंखुडिनुमा बोक्की का बनना, इत्यादि लक्षण शामिल हैं। अतः इसके प्रकोप की निगरानी अवश्य करें। इसके नियंत्रण के लिए 250 मिली फेनवेलरेट 20 प्रतिशत ई सी प्रति हैक्टे. की दर से स्प्रै करें।

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर, जयपुर
1 से 15 अगस्त 2026 तक बाजरे की खेती के लिए सुझाव

रोग प्रबंधन

- जड़ गलन रोग से प्रभावित पौधों के आसपास के स्वस्थ पौधों में कार्बेडाजिम (2 ग्राम प्रति लीटर का घोल) बनाकर 400 से 500 मिलीलीटर प्रति पौधे के हिसाब से जड़ों में डालें।
- बीमारी से सूखे हुए पौधों को उखाड़ दे ताकि बीमारी को आगे बढ़ने से रोका जा सके।
- फसल की लगातार निगरानी रखनी चाहिए व पत्ती मरोड़ रोग से ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर दबा देना चाहिए।

अन्य सुझाव

विश्वविद्यालय द्वारा कपास की खेती के लिए हर 15 दिन में वैज्ञानिक सलाह जारी की जाती है अतः उसके अनुसार ही सस्य क्रियाएं एवं कीटनाशकों का प्रयोग करें।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

9408660365–वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष 8504920051–शस्य विज्ञान वैज्ञानिक 7742724624–पौध संरक्षण वैज्ञानिक

कृषि विज्ञान केन्द्र, गोनेड़ा, कोटपूतली

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर, जयपुर